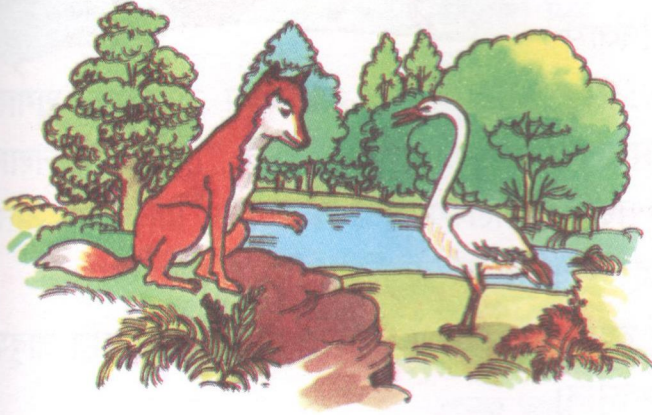


सप्तमः पाठः

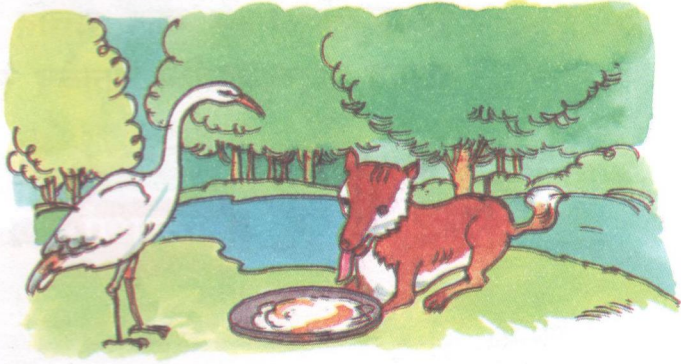
## बकस्य प्रतीकारः

अव्ययप्रयोगः



एकस्मिन् वने शृगालः बकः  
च निवसतः स्म। तयोः  
मित्रता आसीत्। एकदा प्रातः  
शृगालः बकम् अवदत्-  
“मित्र! श्वः त्वं मया सह  
भोजनं कुरु।” शृगालस्य  
निमन्त्रणेन बकः प्रसन्नः  
अभवत्।

अग्रिमे दिने सः भोजनाय  
शृगालस्य निवासम् अगच्छत्।  
कुटिलस्वभावः शृगालः  
स्थाल्यां बकाय क्षीरोदनम्  
अयच्छत्। बकम् अवदत्  
च-“मित्र! अस्मिन् पात्रे  
आवाम् अधुना सहैव  
खादावः।” भोजनकाले बकस्य चञ्चुः स्थालीतः भोजनग्रहणे समर्था न अभवत्।  
अतः बकः केवलं क्षीरोदनम् अपश्यत्। शृगालः तु सर्वं क्षीरोदनम् अभक्षयत्।





शृगालेन वञ्चितः बकः अचिन्तयत्-“यथा अनेन मया सह व्यवहारः कृतः तथा अहम् अपि तेन सह व्यवहरिष्यामि”।

एवं चिन्तयित्वा सः शृगालम् अवदत्-“मित्र! त्वम् अपि श्वः सायं मया सह भोजनं करिष्यसि”। बकस्य निमन्त्रणेन शृगालः प्रसन्नः अभवत्। यदा शृगालः सायं बकस्य निवासं



भोजनाय अगच्छत्, तदा बकः सङ्कीर्णमुखे कलशे क्षीरोदनम् अयच्छत्, शृगालं च अवदत्-“मित्र! आवाम् अस्मिन् पात्रे सहैव भोजनं कुर्वः”। बकः कलशात् चञ्च्वा क्षीरोदनम् अखादत्। परन्तु शृगालस्य मुखं कलशे न प्राविशत्। अतः बकः सर्वं क्षीरोदनम् अखादत्। शृगालः च केवलम् ईर्ष्या अपश्यत्।

शृगालः बकं प्रति यादृशं व्यवहारम् अकरोत् बकः अपि शृगालं प्रति तादृशं व्यवहारं कृत्वा प्रतीकारम् अकरोत्।

उक्तमपि-

आत्मदुर्व्यवहारस्य फलं भवति दुःखदम्।  
तस्मात् सद्व्यवहर्तव्यं मानवेन सुखैषिणा॥

### शब्दार्थाः



|              |          |              |
|--------------|----------|--------------|
| शृगालः       | - सियार  | jackal       |
| बकः          | - बगुला  | Indian crane |
| आसीत्        | - था/थी  | was          |
| एकदा (अव्यय) | - एक बार | once         |





|                  |                                        |                        |
|------------------|----------------------------------------|------------------------|
| अवदत्            | - बोला                                 | said/told              |
| श्वः             | - (आने वाला) कल                        | tomorrow               |
| कुरु             | - करो                                  | do                     |
| स्थाल्याम्       | - थाली में                             | in the plate           |
| अयच्छत्          | - दिया                                 | gave                   |
| सङ्कीर्णमुखे     | - संकुचित मुख<br>वाले/तंग मुख वाले में | in a narrow mouth      |
| सहैव (सह+एव)     | - साथ ही                               | same time              |
| चञ्चुः           | - चोंच                                 | beak                   |
| स्थालीतः         | - थाली से                              | from plate             |
| अपश्यत्          | - देखता था/देखती थी                    | saw                    |
| अभक्षयत्         | - खाया/खायी                            | ate                    |
| चिन्तयित्वा      | - सोचकर                                | after deep thought     |
| प्रतीकारम्       | - बदला                                 | revenge                |
| सद्व्यवहर्तव्यम् | - अच्छा व्यवहार<br>करना चाहिए          | one should act<br>good |
| सुखैषिणा         | - सुख चाहने वाले के द्वारा             | by pleasure seeker     |

### अभ्यासः



#### 1. उच्चारणं कुरुत-

|         |      |        |           |
|---------|------|--------|-----------|
| यत्र    | यदा  | अपि    | अहर्निशम् |
| तत्र    | तदा  | अद्य   | अधुना     |
| कुत्र   | कदा  | श्वः   | एव        |
| अत्र    | एकदा | ह्यः   | कुतः      |
| अन्यत्र | च    | प्रातः | सायम्     |





**2. मञ्जूषातः उचितम् अव्ययपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत-**

अद्य      अपि      प्रातः      कदा      सर्वदा      अधुना

- (क) ..... भ्रमणं स्वास्थ्याय भवति।  
 (ख) ..... सत्यं वद।  
 (ग) त्वं ..... मातुलगृहं गमिष्यसि?  
 (घ) दिनेशः विद्यालयं गच्छति, अहम् ..... तेन सह गच्छामि।  
 (ङ) ..... विज्ञानस्य युगः अस्ति।  
 (च) ..... रविवासरः अस्ति।

**3. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तरं लिखत-**

- (क) शृगालस्य मित्रं कः आसीत्?  
 (ख) स्थालीतः कः भोजनं न अखादत्?  
 (ग) बकः शृगालाय भोजने किम् अयच्छत्?  
 (घ) शृगालस्य स्वभावः कीदृशः भवति?

**4. पाठात् पदानि चित्वा अधोलिखितानां विलोमपदानि लिखत-**

यथा- शत्रुः      मित्रम्

सुखदम्      .....

दुर्व्यवहारः      .....

शत्रुता      .....

सायम्      .....

अप्रसन्नः      .....

असमर्थः      .....





### 5. मञ्जूषातः समुचितपदानि चित्वा कथां पूरयत-

|         |           |        |          |          |          |
|---------|-----------|--------|----------|----------|----------|
| मनोरथैः | पिपासितः  | उपायम् | स्वल्पम् | पाषाणस्य | कार्याणि |
| उपरि    | सन्तुष्टः | पातुम् | इतस्ततः  | कुत्रापि |          |

एकदा एकः काकः ..... आसीत्। सः जलं पातुम्

..... अभ्रमत्। परं ..... जलं न प्राप्नोत्। अन्ते सः

एकं घटम् अपश्यत्। घटे ..... जलम् आसीत्।

अतः सः जलम् ..... असमर्थः अभवत्। सः एकम्

..... अचिन्तयत्। सः ..... खण्डानि

घटे अक्षिपत्। एवं क्रमेण घटस्य जलम् ..... आगच्छत्।

काकः जलं पीत्वा ..... अभवत्। परिश्रमेण एव .....

सिध्यन्ति न तु .....



### 6. तत्समशब्दान् लिखत-

|      |       |        |
|------|-------|--------|
| यथा- | सियार | शृगालः |
|      | कौआ   | .....  |
|      | मक्खी | .....  |
|      | बन्दर | .....  |
|      | बगुला | .....  |
|      | चोंच  | .....  |
|      | नाक   | .....  |

